|  |  |
| --- | --- |
|  | **International Research Journal of Human Resource and Social Sciences****ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)****Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 02, February 2023****Website**- [www.aarf.asia](http://www.aarf.asia), **Email** : editoraarf@gmail.com |

**हिन्‍दी नवजागरण और दलित चेतना**

डॅा0 योगेन्द्र प्रसाद मुसहर,

हिन्दी विभाग,सहायक प्राध्यापक,बोकारो महिला कॅालेज

बोकारो स्टील सिटी,झारखण्ड,भारत

संक्षेप सार

19वीं शताब्‍दी के सम्‍पूर्ण विश्‍व में नवजागरण की जो लहर उठी, वह एक आन्‍दोलन का रूप ले लिया, हरआन्‍दोलन की जड़ सामाजिक आधार होता है। भारतीय नवजागरण का आरंभ मुख्‍यत: धार्मिक और सामाजिक सुधार के रूप में सामने आया इसका स्‍वरूप यूरोप के तमाम देशों से भिन्‍न दिखाई पड़ता है, यहा सामंतीय तत्‍वों और पूंजीवादी शक्तियों के बीच वैसा सीधा संघर्ष नहीं हो पाया जैसा कि यूरोप में हुआ। औधोगिक मजदूर वर्ग का अभाव और ब्रिटिश शासन सत्ता की नीतियॉ भी इसमें मुख्‍य रूप से बाधक सिद्ध हुई।

मुख्‍य शब्‍द

नवजागरण एक ऐतिहासिक अवधारणा है, जिसका सम्‍बन्‍ध आधुनिक काल की उस चेतना से है जो मध्‍यकालीन चेतना से गुणात्‍मक रूप से भिन्न है। अंग्रेजों के आने से पहले भारतीय समाज में पूंजीवादी तत्‍वों का बोलबाला था लेकिन वे इतने शक्तिशाली नहीं बन सके थे कि मध्‍यकालीन सामंती ढांचे को बदल पाते तथा मानव संबंधो और नये जीवन मूल्‍यों को सामने लाते। इसमें तत्‍कालीन आत्‍मनिर्भर ग्राम व्‍यवस्‍था भी बाधक थीए उसके माध्‍यम से सामंती सामाजिक संबंधो और उसके मूल्‍यों मापदंडों की कारगर ढंग से रक्षा हो रही थी पूरा समाज कर्मफल, भाग्‍यवाद, पुर्नजन्‍म, बहुदेववाद मूर्तिपूजा, सतीप्रथा, बाल.विवाह, छुआछूत जाति.पांति जैसी कुरीतियों से ग्रसित था।

परिचय

 भारत में अंग्रेजो/यूरोपियनों के साथ-साथ सामाजिक सांस्‍कृतिक रूप से जो महत्‍वपूर्ण घटना घटी उसे नवजागरण के नाम से जाना जाता है,जिसमे भक्ति आन्दोलन के बाद ठहरे हुए जड़ भारतीय समाज को जगाया बल्कि ज्‍यादे तर्कसम्‍मत और बुद्धिवादी तरीके से समाज की विसंगतियों पर चोट किया। जाति से समाज की विसंगतियो पर चोट किया। जाति विरोध और दलित चेतना इसकी तार्कित परिणति थी। हिन्‍दी क्षेत्र में इस वर्ण व्यवस्था विरोध और दलित चेतना के स्तर पर चल रहे बौधिक विमर्शो और समाजिक आन्दोलनो को देखने और समझने की आवश्‍यकता है।

विश्‍लेषण

अंग्रेजी राज्‍य की स्‍थापना के बाद देश में बुनियादी परिवर्त्तन आया इसके फलस्‍वरूप धर्म समाज आचार-विचार की जड़ता को एक धक्‍का लगा। इसाई धर्म की प्रचार.प्रसार के कारण हिन्‍दु.मुसलमानों की धर्म संस्‍कृति पर नए सवाल उठने लगे ऐसी स्थिति में धार्मिक सामाजिक परिस्‍कार की ओर लोगों का ध्‍यान उन्‍मुख होना स्‍वभाविक था। आर्थिक परिवर्त्तन, नयी शिक्षा, पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान यातायात के नए साधन, नए कानून आदि का फलस्‍वरूप समाज का जो आधुनिकीकरण आरंभ हुआ, वह पुराने सामाजिक धर्मिक संस्‍कारो/रीति-रिवाजों से मेल नहीं खा रहा था। नए यथार्थ और पुराने संस्‍कारों के बीच संधर्ष सामंजस्‍य की स्थिति बन रही थी। इसी संधर्ष-सामंजस्‍य के साथ ही नए भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया आरंभ हुई, जिसे भारतीय भाषाओं में 19वीं शदी का नवजागरण, पुर्नत्‍थान, रिनेशा, पुर्नजागरण इत्‍यादि विभिन्न नामों से जाना जाता है।नई परिस्थितियों ने धर्म, समाज, शिक्षा साहित्‍य और राजनीति सबको समान रूप से प्रभावित किया। परिणाम.स्‍वरूप धार्मिक, सामाजिक, एवं राजीतिक जीवन तथा शिक्षा साहित्‍य कलाए विज्ञान के क्षेत्रों में नवीन तथा व्‍यापक दृष्टिकोणो , मान्‍यताओं, विचारों और प्रवृत्तियों को बढावा मिला। ब्रह्म समाज, आर्य समाज प्रार्थना समाज, सत्‍य-शोधक समाज श्री नारायण धर्म परिपालन,राम कृष्‍ण मिशन इत्‍यादि ने तत्‍कालीन यथार्थ के आलोक में समाज के रूपातंरण को प्रभावित करना शुरू किया। इस नए परिवेश में जातिप्रथा, छुआछूत, वाह्यडंबर मूर्तिपूजा आदि का विरोध और स्त्रियों की मुक्ति के लिए आन्‍दोलन उठने लगे। फलत: राजारामोहन राय ने जाति प्रथा को अमानवीय और राष्‍ट्र विरोधी कहा, रानाडे ने समर्थन किया। स्‍वामी विवेकानांद ने कहा. निम्‍न वर्गों को मत भूलों उन्‍हे अज्ञानी, दरिद्र और अनपढ़ समझ कर उसे दरकिनार नहीं करना चाहिए मोची, मेहतर, डोम, चमार, भुइयाँ, मुसहर ये सारी जातियाँ तुम्‍हारे ही तरह हाड़ मांस और रक्‍त से बने हुए तुम्‍हारे ही बन्धु हैं।

सुमित सरकार लिखते हैं- निन्‍म जातियो को लेकर वर्णाश्रम और ब्राहम्णवाद विरोधी आन्‍दोलनों का पहला वास्‍तविक बिगुल महाराष्‍ट्र में 1870 के दशक में बजा और इसके नायक ज्‍योतिबा फूले का नाम आदर के साथ लिया जाता है। 19वीं शदी के अंत तक आते-आते अनेक जाति-विरोध आन्‍दोलन भारत के विभिन्न हिस्‍सों में उठने लगे। इनमें बंगाल का ब्रह्म समाज से प्रेरित नामशुद्रों का आन्‍दोलन, पश्चिम उत्तर प्रदेश का- आदि हिन्‍दू आन्‍दोलन (आर्य समाज से प्रेरित)पंजाब का आदि धर्म आन्‍दोलन श्री नारायण धर्म परिपालन का झझवा लोगों का आन्‍दोलन साधुजन परिपालन का समाजम् आन्‍दोलनए केरल का पुलाया महासभा आन्‍दोलन प्रमुख थे। दलितों के आन्‍दोलन का प्रारंभिक आन्‍दोलन का फोकस-मंदिर प्रवेश , बाजारों में प्रवेश, स्‍कूलों में प्रवेश, छुआछूत और देवदासी प्रथा का उन्‍मूलन करना रहा था। धीरे-धीरे दलितों के आन्‍दोंलनों ने सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ आर्थिक मुद्दे भी उठाने शुरू किए। इन्‍होनें दलितों के लिए वनभूमि की माँग, जातिगत बेगारी से मुक्ति के लिए आवाज उठायी, तथा श्रमिक वर्ग को संगठित करने का प्रयास किया।

 दलित आन्‍दोलन का दूसरा चरण राजनैतिक अधिकारों और सत्ता में हिस्‍सेदारी की मांग करने लगे, डॉ॰ अम्‍वेड़कर ने

कहा‘’ हमलोगों को शासक समुदाय बनना होगा।‘’20वीं शदी के दूसरे दशक तक आते-आते दलितों हिन्‍दू धर्म से अपने को पृथक करना शुरू किया तथा पृथक निर्वाचन की मांग की। यह दरअसल 1909 के मिंटो-मार्ले सुधार- जिसने मुसलमानों को पृथक निर्वाचन प्रतिनिधित्‍व करने को कहा गया था।

 1930 में प्रथम गोलमेज सम्‍मेलन में डॉ0 अम्‍बेडकर ने प्रमुखता से अपनी बात को रखी थी दलित जातियों के इस मांगो और ईसाई मत एवं इस्‍लाम द्वारा धर्म परिवर्त्तन करवाने की सम्‍भावना की अशंका से उच्‍च जातियों के उदारवादी नेताओं ने वृहत्त हिन्‍दू समुदाय को चेतावनी दी और आह्ववान किया कि दलितों से उदारता के साथ पेश आए एवं स्‍वाधीनता आन्‍दोलन में सहभागिता दें, इन उदारवादी नेताओं ने दलितों की समस्‍या को हिन्‍दू धर्म की आंतरिक समस्‍या मानकर सुधार करना चाहा, गाँधी जी इस दृष्टिकोण से प्रमुख अगुवा थे अछूत समस्‍या आर्थिक न होकर हिन्‍दू धर्म एवं समाज की एक नैतिक समस्‍या है। उनके अनुसार आर्थिक-राजनैतिक न होकर मनोवैज्ञानिक था।

डॉ0 अम्‍बेडकर इस विचार से सहमत नहीं थे वह अहूत समस्‍या को आर्थिक और राजनैतिक मानते थे, लेकिन मैकडोनल्‍ड अॅवार्ड का विवाद और पूना पैक्‍ट के समझौते में डॉ0 अम्‍बेडकर को मजबूरी में झुकना पड़ा जिसे दलित आन्‍दोलन में चेतना की लडाई धीमी पड़ गई। हिन्‍दी क्षेत्र में नवजागरण के उन्‍नायकों में भारतेन्‍दु एवं उनका मण्‍डल और दयानंद सरस्‍वती का आर्यसमाज का आन्‍दोलन प्रमुख है। स्वामी अछूतानन्द ने आदि हिन्दू आन्दोलन चलाया। हिन्‍दी पट्टी क्षेत्र में जाति के सवाल पर और अछूतोद्धार को बाद में गाँधी ने प्रमुखता से रखा जिसके पीछे कहीं न कहीं अम्‍बेडकरी दबाव कार्यरत था।

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के आरम्भिक दशकों में कविताए कहानी गीत भाषण और पत्रकारिता के माध्यम से उन्‍होंने दलित स्‍वाभिमान और दलित मुक्ति के सवाल उठाए। उन्‍होंने उद्घोष किया कि दलित/अछूतों का हिन्‍दुओं के वेद, शास्‍त्रों विधि विधानों और देवी देवताओं से कोई संबंध नहीं है । बल्कि दलितों के शिक्षा चिकित्‍सा रोजगार आदि के लिए उन्‍होंने विशेष व्‍यवस्‍था की मांग की । 1932 में गोलमेज सम्‍मेलन में विवाद उठा तो डॉ0 अम्‍बेडकर के समर्थन में सैकड़ो पत्र और टेलीग्राम भिजवाए। 1928 में कानपुर में दलित सम्‍मेलन का अछूतानंद एवं अन्‍य ने आयोजन करवाया था जिसमें अम्‍बेड़कर भी शामिल हुए थे, लेकिन हिन्‍दी क्षेत्र की सामाजिक परिस्थितियाँ और शक्तियों की अपनी सीमाऍं,एक बौद्धिक वर्ग की अनुपस्थिति और अम्‍बेडकर जैसे विराट पथ-प्रदर्शक नेतृत्‍व के अभाव इत्‍यादि कुछ कारण थे जिसकी वजह से ‘’आदि हिन्‍दू’’ का प्रभाव व्‍यापक नहीं हो सका।

अम्‍बेड़करी दबाव में गाँधी जी ने 1932 में अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्‍थापना किया जिसका उदेश्‍य अनेक अछूतोद्धार समस्‍या का उन्‍मूलन करना अस्‍पृथ्‍थता और दलित चेतना को लेकर गाँधी और अम्‍बेड़कर में अपनी-अपनी धारणाएँ थी हिन्‍दी क्षेत्रों में अम्‍बेडकर का प्रभाव था खासकर प्रेमचंद के गोदान गोदन में पंडित मातादीन के मुँह में चमारो द्वारा हड्डी डलवाकर उसका धर्म लेने जैसी अक्रामक कार्यवाही डॉ0 अम्‍बेडकर के असर को दिखाती है, न कि गाँधी के प्रभाव से।

निष्‍कर्ष

हिन्‍दी नवजागरण में दलित /अछूतों पर जिन लेखको ने कलम चलाई उनमें प्रेमचंद, राहुल सांस्‍कृत्‍यायन तथा निराला प्रमुख है, जिन्‍होंने पहली बार वैज्ञानिक तर्कों और नई नयी जनवादी चेतना से लैस होकर वर्णव्‍यवस्‍था पर महत्‍वपूर्ण प्रहार किया। हलांकि इनकी भी अपनी सीमाऍं थी। हिन्‍दी क्षेत्र में नवजागरण का प्रवाह 1947 तक बहता रहा, लेकिन वर्ण व्‍यवस्‍था और दलित समस्‍या की ओर लेखकों का ध्‍यान कम गया। यह 20वीं सदी के अंतिम दशकों में ही सम्‍भव हुआ कि दलित चेतना-साहित्‍य हिन्‍दी क्षेत्र/साहित्‍य की प्रमुख धारा बनी

संदर्भ

1. शिवकुमार मिश्र, दलित साहित्‍य का आन्‍दोलन और हिन्‍दी क्षेत्र, नयापथ अंक 24-25 1997, पृ0.96
2. राजेन्‍द्र यादव, नवजागरण के रक्‍तबीज, हंस जुलाई 2002 पृ0-09
3. नामवर सिंह, हिन्‍दी नवजागरण की समस्‍याएँ, आलोचना अक्‍टुबर-दिसम्‍बर 1986 पृ0-06
4. बच्‍चन सिंह, आधुनिक हिन्‍दी साहित्‍य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1986. पृ0-40
5. सुमित सरकार,आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन 1996 पृ0-98